शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2014

शोध के प्रति वाणिज्य प्राध्यापकों की अभिरुचि का विश्लेषणात्मक अध्ययन (इंदौर शहर के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. हेमा मिश्रा
सहायक प्राध्यापक
श्री क्लाथ मार्केट कन्या वाणिज्य महाविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

शिक्षा का मुख्य आधार ही शिक्षक होता है। अध्ययन-अध्यापन का अहम आधार होता है इसकी सामग्री। अर्थात पढ़ाने हेतु संदर्भ सामग्री एवं पढ़ने के लिये पाठ्य पुस्तकों का निर्माण करना। शिक्षक का कार्य होता है कि वह पठन-पाठन के लिये योग्य सामग्री का निर्माण करें। साधन निर्माता के रूप में शिक्षक दो प्रकार से कार्य कर सकता है। संबंधित विषय पर किताबें लिखकर तथा शोध कार्य करके विषय के नये पहलुओं पर अपने विचार प्रकट करके साधनों का निर्माण किया जा सकता है। शोध कार्य करने से अध्ययन-अध्यापन सामग्री निर्माता के रूप में शिक्षक अपनी भूमिका अच्छे से निभा सकता है। विभिन्न राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लेने से शिक्षक के ज्ञान एवं कुशलता में वृध्दि होती है। शिक्षक के व्यक्तित्व का विकास होता है। इसका प्रभाव उसके अध्यापन की गुणवत्ता पर पडता है। सेमिनार में भाग लेना, उसमें सहभागिता का एक पहलू है। सेमिनार में संपूर्ण सहभागिता तो तब मानी जाएगी जब उसमें शोध पत्र भी तैयार करके प्रस्तुत किया जाय। एक विषय सामग्री निर्माता बनने के लिये यह आवश्यक है। शिक्षक द्वारा साधन निर्माता के रुप में भूमिका सफलतापूर्वक निभाने से न केवल शिक्षक का बल्कि विद्यार्थी का भी विकास होता है। शासन द्वारा भी शिक्षकों को सेमिनार इत्यादि में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है, परंतु वाणिज्य शिक्षक इस संबंध में उदासीन हैं। शोध निष्कर्ष बताते हैं कि अधिकांश प्राध्यापक केवल औपचारिकता के लिये ही सेमिनार इत्यादि में भाग लेतें हैं। प्राध्यापकों की यह प्रवृत्ति संपूर्ण उच्च शिक्षा जगत के विकास लिये घातक है।

प्रस्तावना

शिक्षा का मुख्य आधार ही शिक्षक होता है। शैक्षिक पर्यावरण का मुख्य आंतरिक घटक शिक्षक है। जिस प्रकार उद्योग में कार्यरत कर्मचारी उद्योग के लिये महत्वपूर्ण होता है, उसी प्रकार शिक्षण संस्थाओं में शिक्षक महत्वपूर्ण होता है। शासन की योजनाओं का पालन एवं क्रियान्वयन शिक्षकों के माध्यम से ही होता है। किसी भी महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु विद्यार्थियों के लिये प्रेरणास्पद घटक शिक्षक ही होता है। शिक्षक द्वारा किये गये सभी कार्यों का प्रभाव संस्था पर पड़ता है। जहां शिक्षक द्वारा किये गये अच्छे कार्यों से संस्था की ख्याति में वृध्दि होती है, वहीं बुरे कार्यों से संस्था की प्रतिष्ठा बुरी तरह से प्रभावित होती है। शिक्षकों का मानव पूंजी को तैयार करने में भी बडा

योगदान है, बशर्ते वे अपनी निर्धारित भूमिका का निर्वाह अच्छी तरह से करें।

हार्डेन एवं क्रासबे के अनुसार महाविद्यालयीन शिक्षकों की भूमिका मुख्यतः 6 प्रकार की होती है। उसके अनुसार शिक्षकों की विविध प्रकार की भूमिकाएं इस प्रकार हैं - जानकारी प्रदानकर्ता, आदर्श शिक्षक, मददकर्ता, मूल्यांकक, नियोजनकर्ता तथा साधन विकसित करना।

साहित्य पुनरावलोकन

(1) Ruth Zuzovsky Teachers' qualifications and their impact on student achievement Center for Science and Technology Education, Tel Aviv University, Tel Aviv, Israel

इस अध्ययन के अनुसार शिक्षा से संबंधित अन्य शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेने वाले शिक्षकों का कार्य निष्पादन अन्य प्राध्यापकों की अपेक्षा ज्यादा अच्छी गुणवत्तायुक्त होता है। अतः शिक्षकों को शैक्षणिक कार्य के अलावा अन्य गतिविधियों में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

(2) Nilay Ranjan & Naimur Rahman-Role of teacher in enhancing learning achievement of child & emphasis on teacher skill development, knowledge building and ICT.The knowledge revolution and role of the teacher.

शिक्षा को प्रभावित करने वाले परिवर्तन पर जिस गति से प्रतिक्रिया व्यक्त की जा रही है, उसमें तेजी लाने की आवश्यकता है। वर्तमान पाठ्यक्रम की रूपरेखा को पुनर्गठित करने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में नई प्रौद्योगिकी को आत्मसात करने के लिये शिक्षक, प्रशासक तथा विद्यार्थियों के लिये प्रशिक्षण तथा उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित करने की तत्काल आवश्यकता है। इस हेतु इन सभी को जानकारी साझा करने, बातचीत करने एवं परामर्श में शामिल किया जाना चाहिये।

(3) Dr. Anita Pathania -Teachers' Role in quality enhancement and value education academe vol XIV No1 January 2011

किसी भी देश के लिये शिक्षक की भूमिका देश के भविष्य निर्माता के रूप में महत्वपूर्ण है तथा शिक्षक के लिये यह उदात्त कार्य है। शिक्षण की खराब गुणवत्ता, घटिया शिक्षण पध्दति, बदलता सामाजिक दृष्टिकोण तथा बढती व्यावसायिकता ने शिक्षा तथा शिक्षक का मान घटाया है। इसलिये हमारी शिक्षा प्रणाली का आधार भारतीय शिक्षा पद्धति होना चाहिए।

(4) Manzoor A Shah – Faculty development in higher education- University News Page No 16-23, Vol. No. 37(50), September 2012, ISSN 0566-2257

शैक्षणिक संस्थाओं में संकाय विकास कार्यक्रमों की कमी है। शिक्षा की गुणवत्ता बनाये रखने के लिये प्राध्यापाकों की शैक्षणिक योग्यता, अध्यापन की कुशलता तथा तकनीकी कुशलताओं का विकास करना संकाय विकास कार्यक्रमों के प्रमुख उद्देश्य हैं। इस प्रकार के कार्यक्रमों का कम मात्रा में आयोजन का अर्थ है शिक्षा की गुणवत्ता में कमी होना। इसका प्रतिकूल असर शैक्षणिक क्षेत्र विकास पर पडता है।

(5) Promod P. Waghmare – Present scenario of faculty improvement programme and innovations in higher education - University News Page No. 05-15, Vol. No. 34(50), August 2012, ISSN 0566-2257

शिक्षा के बदलते हुए वातावरण के फलस्वरूप शिक्षकों को अनेक नयी चुनोतियों का सामना

करना पड रहा है इसलिये अच्छा शिक्षक बनने के लिये केवल अपने पाठ्य विषय पर प्रभुत्व होना पर्याप्त नहीं है। बल्कि नये ज्ञान, तकनीक तथा संप्रेषण पर प्रभुत्व होना भी आवश्यक है। शिक्षको को अच्छा कार्य करने हेतु अभिप्रेरण की भी आवश्यकता है।

(6) Garima Tyagi – Implementing total quality management in education – A strategy to improve the quality of education. The Feduni Journal of Higher Education Vol. VII No. 1 Page No.74, February 2012, published by The Fcsai University press.

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का संबंध केवल अच्छे पाठ्यक्रम से नही होता है। अच्छे पाठ्यक्रम के साथ-साथ इसमें छात्रों में आधारभूत कुशलता विकसित करने की क्षमता भी होनी चाहिये। इसके अलावा विद्यार्थियों का ज्ञान एवं कुशलताएं समाज तथा राष्ट्र की आवश्यकतानुसार होना चाहिये।

(7) G.D. Sharma – Quality in higher education through consolidation and collaboration. University News Page No. 28-31, Vol. No. 43(50), October 2012, ISSN 0566-2257

उच्च शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ उनमें ऐसी कुशलताओं का विकास करना है जिससे उनकी भविष्य की आवश्यकताओं को भी पूरा किया जा सके। इसके अलावा शिक्षकों को प्रशिक्षण, उच्च शैक्षिक प्रमापों का निर्धारण, गुणवत्तापूर्ण शोध कार्य को प्रोत्साहन आदि के माध्यम से भी शिक्षा क्षेत्र में गुणवत्ता विकसित करना चाहिये।

(8) P.P.Mathur – Quality in higher education – Challenges of internationalisation of higher educational institutions. University News Page No .32-34, Vol. No. 43(50), October 2012, ISSN 0566-2257

विदेशी विश्वविद्यालयों के आगमन से भारतीय शैक्षिक जगत में गुणवत्ता के नये मापदण्ड स्थापित हो गये हैं। अब भारतीय विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों को भी तकनीक, नयी अध्यापन विधियां, शोध की गुणवत्ता तथा शिक्षा की व्यावसायिकता के लिये विदेशी शैक्षिक संस्थाओं से कडी प्रतियोगिता का सामना करना पड रहा है।

(9) Morion Mathew C.J.- Promoting culture of quality and excellence in higher education institutions – Issues and challehges. University News Page No. 42-45, Vol. No. 43(50), October 2012, ISSN 0566-2257

उच्च शैक्षिक संस्थानों में गुणवत्ता विकसित करने के लिये जरूरी है कि छात्रों में उद्यमिता का विकास, नेतृत्व का विकास, काबिल प्राध्यापकों की नियुक्ति, प्राध्यापकों के प्रशिक्षण पर ध्यान देना, गुणवत्तापूर्ण शोध कार्य, राजनैतिक प्रभावों से शैक्षिक संस्थाओं की मुक्ति इत्यादि उपाय करने होंगे।

(10) Dr. S.D. Vashisth and Priti Sharma – Intellectual capital in learning organization. Prabandhan, Indian Journal of Management, page No. 38, vol. No. 5, March 2012. ISSN 0975-2854

प्रत्येक शिक्षण संस्था का आधार उसकी बौद्धिक पूंजी होती है। शिक्षण संस्थाओं की बौद्धिक पूंजी से आशय इस क्षेत्र में कार्यरत शिक्षक। जब तक बौद्धिक पूंजी का विकास नहीं होता तब तक शिक्षा क्षेत्र में गुणवत्ता विकास की कल्पना करना बेकार है।

शोध विषय से संबंधित विभिन्न विद्वानों के द्वारा प्रतिपादित शोध निष्कर्षों से यह स्पष्ट

होता है कि शोध कार्य शिक्षा का अनिवार्य अंग बनता जा रहा है। शैक्षणिक गुणवत्ता के लिये स्थापित मापदंड¨ की सूची में शोध कार्य को अग्रिम स्थान प्राप्त है। शिक्षको का ज्ञान तथा कुशलता का आधार शोध से संबंधित कार्य करना है।

शोध का उद्देश्य

इस शोध का मुख्य उद्देश्य साधन निर्माता के रूप में वाणिज्य विषय के प्राध्यापकों की भूमिका का विश्लेषण करना है। इसके अलावा अन्य उद्देश्य हैं-

1 प्राध्यापाकों की अंतर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय सेमिनार में सहभागिता का अध्ययन करना।

2 प्राध्यापाकों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय सेमिनार में शोध प्रस्तुतिकरण की जानकारी प्राप्त करना।

3 प्राध्यापाकों द्वारा शोध पत्रिकाओं में शोध पत्रों के प्रकाशन की जानकारी प्राप्त करना।

4 प्राध्यापाकों द्वारा किताबों के प्रकाशन की जानकारी प्राप्त करना।

शोध समस्या का उदगम

उच्च शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण विकास के लिये यह आवश्यक हो गया है कि सभी विषयों में अच्छे से अच्छा शोध कार्य संपन्न किया जाय। परंतु इस बारे में आम धारणा है कि प्राध्यापकों के सेमिनार में भाग लेना, शोध पत्र प्रकाशित करना अथवा किताब प्रकाशित करने में कोई दिलचस्पी नही है। प्राध्यापाकों की सेमिनार में वास्तविक उपस्थिति कम ही होती है। इस धारणा को परखने के उद्देश्य से यह शोध विषय चयनित किया गया है। इसके साथ-साथ प्राध्यापाकों की उदासीनता का कारण जानने की जिज्ञासा इस श¨ध पत्र का आधार है।

शोध विधि

प्रस्तावित अध्ययन में समंकों का संग्रहण मुख्यतः प्राथमिक समंकों के आधार पर किया गया है। इस हेतु देवी अहिल्या विश्वविद्यालय से संबद्ध वाणिज्य महाविद्यालयों में कार्यरत 150 प्राध्यापकों का चयन सविचार न्यादर्श पद्धति के आधार पर किया गया। इनमें से 72 पुरुष प्राध्यापक तथा 78 महिला प्राध्यापक हैं। प्रश्नावली एवं साक्षात्कार विधि के माध्यम से शोधोपयोगी समंकों का संग्रहण किया गया। इस प्रकार प्राप्त समंकों का विश्लेषण करके निष्कर्ष ज्ञात किये गये है। वाणिज्य प्राध्यापकों से जानकारी मुख्यतः सेमिनार में भाग लेने, शोध पत्र का प्रकाशन करने तथा किताब प्रकाशित करने के बारे में प्राप्त की गई थी। इसका विस्तृत विश्लेषण इस प्रकार है-

वाणिज्य प्राध्यापकों की सेमिनार में सहभागिता

पढ़ाने के अलावा उच्च शिक्षा के शिक्षकों का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य है शोध गतिविधियों में भाग लेना। शोध गतिविधियां दो प्रकार की होती हैं। जिसमें संगोष्ठी एवं प्रकाशन कार्य सम्मिलित है। शोध कार्य करने से अध्ययन-अध्यापन सामग्री निर्माता के रूप में शिक्षक अपनी भूमिका को अच्छे से निभा सकता है। विभिन्न राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने से शिक्षक के ज्ञान एवं कुशलता में वृद्धि होती है। शिक्षक के व्यक्तित्व में विकास होता है। इसका प्रभाव उसके अध्यापन की गुणवत्ता पर पडता है। विद्यार्थी भी उसी शिक्षक की कक्षा में उपस्थित रहना पसंद करते हैं जिनके पास किताबी ज्ञान के अलावा ज्यादा जानकारी है। इस प्रकार की विशेष जानकारी प्राप्त करने का प्रभावी माध्यम

संगोष्ठी है। इसके अलावा विभिन्न प्रांत एवं देश क¢ विद्वान¨ं से मिलने का तथा उनक¢ विचार अ©र कार्य प्रणाली जानने का म©का मिलता है। इससे शिक्षक तथा शिक्षा की गुणवत्ता निश्चय ही बढती है। इस संबंध में चयनित प्राध्यापक¨ं से प्राप्त जानकारी का विवरण इस प्रकार है-

वाणिज्य प्राध्यापकों की सेमिनार में सहभागिता

(गत पांच वर्षों में)

तालिका क्रमांक 01

सेमीनार की संख्या	महिला		पुरुष	
	राष्ट्रीय	अंतर्राष्ट्रीय	राष्ट्रीय	अंतर्राष्ट्रीय
1-5	36	21	50	28
5-10	12	01	10	01
10-15	02	"	01	"
15-20	04	"	03	"
20 से अधिक	02	"	08	01
कुल	56	22	69	30

उपर्युक्त तालिका के अनुसार 78 महिला प्राध्यापकों में से 56 प्राध्यापक अर्थात 72 प्रतिशत महिलाएं विभिन्न राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेती हैं तथा केवल 29 प्रतिशत महिलाएं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेती हैं। पुरुष प्राध्यापकों में से 95 प्रतिशत राष्ट्रीय तथा 42 प्रतिशत अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लेते हैं। महिलाओं की कम सहभागिता का मुख्य कारण है उनकी केवल स्थानीय सेमिनार में भाग लेने में ज्यादा रुचि होती है। परिवार एवं अन्य कारणों से वे इंदौर के बाहर आयोजित होने वाले सेमिनार में भाग नहीं लेती हैं। इसलिये राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों से कम है। पांच से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों में भाग लेने में भी पुरुष महिलाओं से आगे हैं।

सेमिनार में शोध पत्र प्रस्तुति

सेमिनार में भाग लेना, उसमें सहभागिता का एक पहलू है। सेमिनार में संपूर्ण सहभागिता तो तब मानी जाएगी जब उसमें श¨ध पत्र भी तैयार करके प्रस्तुत किया जाय। एक विषय सामग्री निर्माता बनने के लिये यह आवश्यक है। शोध पत्र लिखना एवं उसे प्रस्तुत करना एक कला है। इसे आत्मसात करने के लिये अधिक अभ्यास की जरूरत है तथा अधिक ज्ञान प्राप्त करने की भी आवश्यकता होती है। एक शोध पत्र लिखना संपूर्ण वैज्ञानिक प्रक्रिया है। वही शिक्षक अच्छा शोध पत्र लिख सकता है जिसके पास संपूर्ण शोध प्रविधि की विधिवत जानकारी है। इस संबंध में वर्तमान में कितने प्राध्यापक सेमिनार में अपना शोध पत्र प्रस्तुत कर रहे हैं इसकी जानकारी इस प्रकार है-

वाणिज्य प्राध्यापकों द्वारा सेमिनार में शोध पत्र प्रस्तुति का विवरण

(गत पांच वर्षों में)

तालिका क्रमांक 2

शोध पत्रों की संख्या	महिला		पुरुष	
	राष्ट्रीय	अंतर्राष्ट्रीय	राष्ट्रीय	अंतर्राष्ट्रीय
1-5	32	19	43	19
5-10	06	01	08	01
10-15	02	"	01	"

15-20	01	"	02	"
20 से अधिक	02	"	02	"
कुल	43	20	46	20

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि शोध पत्र प्रस्तुत करने में भी महिलाएं पुरुषों से पीछे ही हैं। सेमिनार में भाग लेने से संबंधित तालिका तथा शोध पत्र प्रस्तुत करने से संबंधित तालिका के तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि प्राध्यापकों की प्रवृत्ति शोध पत्र प्रस्तुत करने की अपेक्षा केवल सेमिनार में उपस्थित रहने की ज्यादा है। अर्थात जितने सेमिनार में वे उपस्थित रहे हैं उन सभी में शोध पत्र प्रस्तुत नहीं किया है। अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में 10 से अधिक शोध पत्र किसी भी शिक्षक ने प्रस्तुत नहीं किये है। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्राध्यापकों की रुचि अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों में भाग लेने तथा शोध पत्र प्रस्तुत करने की ओर कम ही है। परंतु शिक्षा के संपूर्ण विकास तथा गुणवत्ता के लिये प्राध्यापकों की यह प्रवृत्ति बाधक है। इस पर हम सभी को विशेष ध्यान देना चाहिये।

शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध पत्र

शोध अभिरुचि का तीसरा एवं महत्वपूर्ण आयाम है राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त शोध पत्रिकाओं में शोध पत्रों का प्रकाशन करना। यह कार्य सेमिनार में भाग लेने से भी ज्यादा महत्वपूर्ण एवं कठिन है। शोध पत्रिकाओं में शोध पत्र प्रकाशित होना किसी भी शिक्षक के लिये निश्चय ही गर्व की बात है। इसके लिये लिखने की कला होना आवश्यक है। साथ ही भाषा पर प्रभुत्व भी चाहिये। जिस विषय पर शोध पत्र लिखा जा रहा है उस विषय की संपूर्ण जानकारी तथा शोध विधि की भी पूर्ण जानकारी लेखक के पास होना आवश्यक है। हमारे प्राध्यापकों का इस संबंध में क्या रूझान है, इसकी जानकारी एकत्रित की गई, जिसका विवरण निम्नानुसार है।

वाणिज्य प्राध्यापकों द्वारा शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध पत्रों का विवरण

(गत पांच वर्ष में)

तालिका क्रमांक 03

शोध पत्रों की संख्या	महिला		पुरुष	
	राष्ट्रीय	अंतर्राष्ट्रीय	राष्ट्रीय	अंतर्राष्ट्रीय
1-5	09	08	23	11
5-10	01	"	04	01
10-15	02	"	02	"
15-20	"	"	"	"
20 से अधिक	"	"	01	"
कुल	12	08	30	12

उपर्युक्त तालिका के अनुसार मान्यता प्राप्त शोध पत्रिकाओं में शोध पत्र प्रकाशन के मामले में भी पुरूष प्राध्यापक आगे हैं। जहां 30 पुरुषों नें अपने शोध पत्र विभिन्न राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित किये हैं, वहीं केवल 12 महिलाओं ने यह कार्य किया है। राष्ट्रीय पत्रिकाओं में पांच से अधिक शोध पत्र प्रकाशित करने वाले प्राध्यापकों की संख्या अत्यंत कम है। अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में शोध पत्र प्रकाशित करने वाले प्राध्यापकों की संख्या नहीं के बराबर है। कुल 150 प्राध्यापकों में से केवल 42 प्राध्यापक ही

शोध पत्रों के प्रकाशन में रुचि दिखा रहे हैं। यह बात चिंतनीय है। राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में शोध पत्र प्रकाशित न करने का कारण है, इन पत्रिकाओं का उपलब्ध न होना। गत दो-तीन वर्षों से ही शैक्षिक जगत में कुछ नई शोध पत्रिकाओं का चलन आरंभ हुआ है। इसके पूर्व पत्रिकाओं की संख्या कम होने से तथा अधिकांश पत्रिकाएं अंगरेजी में होने से अधिकांश प्राध्यापकों को शोध पत्र प्रकाशित करने में परेशानी हो रही है।

इस प्रकार वाणिज्य प्राध्यापकों की रुचि शोध के प्रति कम ही है। कुछ प्राध्यापक शोध निदेशक बनने के लिये शोध पत्रों के प्रकाशन में रुचि दिखा रहे हैं। शासकीय एवं अनुदान प्राप्त महाविद्यालयों में शासकीय नियमानुसार प्रत्येक प्राध्यापक को स्व-मूल्यांकन का प्रपत्र शैक्षणिक वर्ष के अंत में देना पडता है। उसमें शोध गतिविधियों की भी जानकारी देनी होती है। कुछ प्राध्यापक इस खानापूर्ति के लिये ही सेमिनार में हिस्सा लेते हैं। इस प्रकार स्वेच्छा से कम तथा अनिवार्यता के कारण ज्यादा प्राध्यापक शोध गतिविधियों में भाग लेते हैं।

पुस्तकों के प्रकाशन के प्रति वाणिज्य प्राध्यापकों की उदासीनता है। कुल 150 प्राध्यापकों में से केवल 5 प्रतिशत प्राध्यापकों ने स्वयं की पुस्तक प्रकाशित की है। इस प्रकार साधन निर्माता के रूप में वाणिज्य प्राध्यापकों की भूमिका संदेहास्पद है। उच्च शिक्षा के दीर्घकालीन विकास के लिये यह निश्चय ही चिंताजनक है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 Professor Christine Hockings - Inclusive learning and teaching in higher education, A synthesis of research, April 2010
EvidenceNet is a Higher Education Academy resource. www.heacademy.ac.uk/evidencenet

2 The Hindu July 2009- Higher education & research in India

3 Harden R M and Crosby- The twelve role of the teacher AMEE, Centre for Medical Education, University of Dundee, 484 Perth Road, Dundee DD2 1LR, Scotland, UK.

4 The role of teachers in the assessment of learning- Assessment reform group Supported by the Nuffield foundation

5 UGC Workload and Code Ethics Regulation

6 Dr. Anita Pathania -Teacher role in higher education academe Vol. XIV, January, 2011

7 Ruth Zuzovsky- Impact of teachers qualification
Center for Science and Technology Education, Tel Aviv University, Tel Aviv, Israel

8 Quality Management of HigherEducation a report by dept. of higher education.

9 Vandana saxena, Sanjay Kulsrestha and Bali Khan-Highre Education and Research in India. International Journal of Educational Research and Techonology Vol. I June 2010 ISSN-0976-4089

10 Alok Chakrabarti - Higher Education and Research in India: an Overview. On line Report

11 P. K. Shetty, M. B. Hiremath, M. Murugan and K.G. Sreeja
Research and higher education scenario in select Indian state universities: an analysis Indian Journal of Science and Technology Vol. 3 No. 3 (Mar 2010) ISSN: 0974- 6846 Sci.

12 Hebe Vessuri -The role of research in higher education. On line report.